अध्याय – 10
विकास प्रशासन
(Development Administration)

विकास प्रशासन का अर्थ विकास से सम्बन्धित प्रशासन से लिया जाता है । यह सरकार द्वारा योजनाबद्ध ढंग से राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में परिमाणात्मक एवं गुणात्मक बदलाव लाने की दिशा में एक प्रयास है। यह सरकार की प्रत्येक उस गतिविधि का नाम है, जिसमें जनकल्याण या राष्ट्रीय विकास निहित है। यह न केवल सामान्य / नियामकीय प्रशासन (Regulatory Administration) से जुडा है, वरन मानवीय जीवन के सभी पहलुओं तथा सामाजिक, आर्थिक आदि से भी सम्बन्धित है। विकास प्रशासन एक नवीन अवधारणा है जिसमें विकास से सम्बन्धित घटक शामिल है। सामान्य अथवा नियामकीय प्रशासन पारम्परिक प्रशासन को कहते है। पारम्परिक प्रशासन का मुख्य ध्येय सुरक्षा एवं कानून तथा व्यवस्था (Law and order) बनाए रखना होता है। जबकि विकास प्रशासन का मुख्य लक्ष्य लोक कल्याण है।

'विकास प्रशासन' शब्द का प्रयोग पहली बार एक भारतीय अध्येता यू. एल. गोस्वामी ने 1955 में छपे अपने लेख 'दि स्ट्रक्चर ऑफ डेवलेपमेंट एडमिनिस्ट्रेशन इन इंडिया' में किया था। लेकिन अमेरिकी विद्वान जॉर्ज गैंट को विकास प्रशासन का पिता माना जाता है। उन्होंने भी इसी काल में इस शब्द का प्रयोग शुरू किया। उनकी पुस्तक **"डेवलपमैंट एडमिनिस्ट्रेशनः कॉन्सेप्टस् ,गोल्स एडं मैथड्स्"** पहली बार 1979 में प्रकाशित हुई। एडवर्ड वीडनर विकास प्रशासन के सबसे बडे भाष्यकार है। वे विकास प्रशासन की परिभाषा की पहली बार अवधारणात्मक रूप में व्यवस्था करने वाले व्यक्ति भी है।

उद्‌भव (Emergence) :

1950 और 1960 के दशक में विकास प्रशासन लोक प्रशासन के एक उप क्षेत्र के रूप में उभरा । जिन कारकों ने इसमें योगदान किया वे हैं :

1. पारपरिक लोक प्रशासन द्वारा प्रशासन के अध्ययन पर ज्यादा और प्रशासन के लक्ष्यों के अध्ययन पर जोर कम देना।
2. उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद की समाप्ति के साथ एशिया, अफ्रीका और लातिनी अमेरिका में नव स्वाधीन विकासशील देशों का उदय
3. बहुपक्षीय तकनीकी मदद और वित्तीय सहायता द्वारा विकासशील देशों में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रायोजित विकास योजनाओं को सफल बनाने हेतु यहाँ के प्रशासन के अध्ययन पर जोर दिया गया ।
4. नवोदित विकासशील देशों तक अमेरिका आर्थिक और तकनीकी सहायता योजनाओं का विस्तार
5. अमेरिकन सोसाइटी फॉर पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन के नेतृ 1960 में कम्पेरिटिव एडमिनिस्ट्रेशन ग्रुप (CAG) स्थापना।
6. विकासशील देशों में पश्चिमी प्रतिमानों की नाकामी के क इन देशों की विकास संबंधी आवश्यकताओं को पूरा कर लिए नए स्वदेशी प्रशासनिक मॉडल की खोज करना।

तुलनात्मक लोक प्रशासन की भाँति विकास प्र भी लोक प्रशासन के विकास का एक नया आयाम है। वि प्रशासन एक गतिशील अवधारणा है, जो समाज में आर्थि सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन लाने के लिए प्रयत्न है। इसमें विकास के कार्यों को प्राथमिकता दी जाती है विश्व के देश विकास कार्यों को में लगे है, अतः उन कार्य सुधार रूप में लागू करने के लिए विकास प्रशासन आवश्यकता है इसलिए आज लोक प्रशासन में विकास प्रशा का महत्त्व तथा उपयोगिता स्पष्ट है।

विकास प्रशासन :

विकास प्रशासन शब्द आधुनिक समय में ही प्रयो आया है। सर्वप्रथम एडवर्ड डब्ल्यू.वीडनर ने विकास प्रशासन अवधारणा का प्रतिपादन किया । बाद में प्रो.रिग्स,पालोम्ब वाटसन आदि विद्वानों ने इसके विकास में महत्वपूर्ण योगद दिया। विकास प्रशासन का विशेष महत्व विकासशील देशों लिए है क्योंकि तीसरी दुनिया के देशों के समक्ष मुख्य कार्य तेज से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास करना है। अ विकास की इस अवधारणा ने परम्परागत प्रशासन विकासात्मक प्रशासन की और उन्मुख कर दिया।

अर्थ : विकास प्रशासन की रचना का उद्देश्य यह अध्ययन करना है कि लोक प्रशासन सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लि विभिन्न प्रकार से परिवर्तित भी होता है। इस विस्तृत परिप्रेक्ष्य "विकास प्रशासन" शब्द की अनेक व्याख्याएँ की गयी है विकास शब्द का कोषगत अर्थ उदेश्यमूलक है, क्योकि इसका उल्लेख प्रायः उच्चतर,पूर्णतर और अधिकतर परिपक्वता स्थिति की और बढना है। "विकास" को मन की एक स्थिति तथा "एक दिशा" के रूप में भी देखा गया है। एक निश्चित लक्ष्य की अपेक्षा विकास एक विशिष्ट दिशा में परिवर्तन की गति है इसके अतिरिक्त विकास को परिवर्तन के उस पक्ष के रूप में देखा गया है, जो नियोजित तथा अभीष्ट है और शासकीय कार्यों से निर्देशित हो। ये विभिन्न व्याख्याऐं बताती है कि विकास प्रशासन शब्द दो शब्दों के योग से बना है– विकास तथा प्रशासन

विकास शब्द का अर्थ होता है निरन्तर आगे बढ़ना और प्रशासन का अर्थ है सेवा करना । विकास प्रशासन में जनता की सेवा के लिए विकास कार्यो को करना निहित है। लोक प्रशासन में विकास का तात्पर्य किसी सामाजिक संरचना का प्रगति की और बढ़ना हैं। इस प्रकार समाज में प्रगति की दिशा में जो भी परिवर्तन होता है। उन्हें विकास की संज्ञा दी जाती है। विकास एक निरन्तर गतिशील प्रक्रिया है।

विकास प्रशासन की विद्वानों द्वारा दी गयी कुछ परिभाषाएं निम्नलिखित है :

प्रो. ए. वीडनर के अनुसार, " विकास प्रशासन राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक प्रगति के लिए संगठन का मार्गदर्शन करता है। यह मुख्य रूप से एक कार्योन्मुख एवं लक्ष्योन्मुख प्रशासनिक प्रणाली पर जोर देता है।

प्रो.फैड रिग्ज़ ने इसके सम्बन्ध में कहा है कि " विकास प्रशासन का सम्बन्ध विकास कार्यक्रमों के प्रशासन, बड़े संगठनों विशेषकर सरकार की प्रणालियों, विकास लक्ष्यों की उपलब्धि के लिए नीतियों और योजनाओं को क्रियान्वित करने से है।

डोनाल्ड सी. स्टोन का कहना है कि "विकास प्रशासन निर्धारित लक्ष्यों की प्रगति के लिए संयुक्त प्रयास के रूप में सभी तत्त्वों और साधनों (मानवीय और भौतिक) का सम्मिश्रण है। इसका लक्ष्य निर्धारित समयक्रम के अन्तर्गत विकास के पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति है।

उपर्युक्त परिभाषाओं में भिन्नता के बावजूद भी यह देखने को मिलता है विकास प्रशासन लक्ष्योन्मुखी और कार्योन्मुखी है। परिभाषाओं के विश्लेषण के बाद विकास प्रशासन के सम्बन्ध में निम्नलिखित तत्व सामने आते है।

1. विकास प्रशासन निरन्तर आगे बढ़ने की एक गतिशील प्रक्रिया है।
2. निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए यह एक संयुक्त प्रयास है ।
3. यह तीसरी दुनिया के विकासशील देशों की विभिन्न समस्याओं का समाधान करने का महत्त्वपूर्ण साधन है।
4. यह पिछड़े समाज के परिवर्तन, आधुनिकीकरण, और विकास के लिए शासन तन्त्र है।

विशेषताएँ : विकास प्रशासन सरकार का कार्यात्मक पहलू है जो लक्ष्योन्मुखी होता है, बल्कि यह जनता के साथ कार्य करने वाला प्रशासन है। संक्षेप में, विकास प्रशाासन की निम्नलिखित विशेषताएँ है :

1. परिवर्तनशील : विकास प्रशासन का केन्द्र बिन्दु परिवर्तनशीलता है। यह परिवर्तन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक है। विकासशील देशों में प्रशासन को निरन्तर परिवर्तनों के दौर से गुजरना पड़ता है। इस प्रकार परिवर्तनशीलता विकास प्रशासन की बहुमूल्य पूँजी है जिसके सहारे वह सक्रिय बना रहता है।

2. विकासात्मक प्रकृति : विकास प्रशासन नवीन सुधारों तथा अभिनवकरणों पर निर्भर करता है। इसकी प्रकृति विकासात्मक कार्यक्रमों को लेकर चलने की होती है। इसका प्रमुख उदेद्श्य सामाजिक , आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से पिछड़े समाज का विकास करना है।

3. प्रजातान्त्रिक मूल्यों से सम्बन्धित : विकास प्रशासन जन आकांक्षाओं की पूर्ति के प्रति प्रयत्नशील रहता है। साथ ही विकास प्रशासन का प्रजातान्त्रिक मूल्यों से सम्बन्ध रहता है क्योंकि इसमें मानव अधिकारों और मूल्यों के तत्त्व निहित रहते है। चूंकि विकास प्रशासन का सम्बन्ध सरकारी प्रशासन द्वारा किये जाने वाले प्रयासों से है, और सरकारी प्रशासन जनकल्याण और प्रजातान्त्रिक मूल्यों से जुड़े सरकारी प्रयास जनकल्याण और प्रजातान्त्रिक मूल्यों से जुड़े रहते है, अतः विकास प्रशासन को प्रजातान्त्रिक मूल्यों से पृथक नहीं किया जा सकता।

4. आधुनिकीकरण : विकासशील देशों के विकास के लिए आधुनिक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक हो गया है। साथ ही आज के आधुनिक उदेश्यों को प्राप्त करने हेतु विकास प्रशासन को अपने आपको योग्य बनाना पड़ता है इसके लिए प्रशासनिक आधुनिकीकरण को विकास प्रशासन विकसित देशों से मापदण्ड और तकनीक प्राप्त करता है।

5. प्रशासनिक कुशलता : कुशलता प्रशासन की सफलता की शर्त है। विकास प्रशासन में प्रशासनिक कुशलता को इसलिए महत्त्व दिया जाता है। कि इसके अभाव में विकास के उदेश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करना सम्भव नहीं है। विकास प्रशासन इस बात के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है कि प्रशासनिक विकास के माध्यम से प्रशासन की कार्यकुशलता में वृद्धि की जाए।

6. आर्थिक विकास : आर्थिक विकास और विकास प्रशासन का परस्पर महत्वपूर्ण सम्बन्ध है प्रशासनिक विकास के लिए आर्थिक विकास भी आवश्यक है। विकासशील देशों की विभिन्न आर्थिक योजनाएँ एवं विकास सम्बन्धी कार्यक्रम विकास प्रशासन के सहयोग से ही लागू किये जाते है। विकास प्रशासन ऐसे प्रशासनिक संगठन की रचना करता है जो देश की आर्थिक प्रगति को सम्भव बनाता है तथा आर्थिक विकास के लिए मार्ग प्रशस्त करता हैं राष्ट्र के विकास के लिए आर्थिक योजनाएँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। और इन्हें लागू करने में विकास प्रशासन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

7. परिणामोन्मुखी : विकास प्रशासन का परिणामोन्मुखी होना इसकी एक अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषता है विकास प्रशासन से यह अपेक्षा की जाती है कि वह निर्धारित सीमा के अन्तर्गत कार्यों को सम्पन्न करें और परिणाम अच्छे हों अतः इसमें परिणाम को अधिक महत्व दिया जाता है।

8. प्रतिबद्धता : विकास प्रशासन को समाज के पिछड़े एवं वंचित वर्गो के कल्याण हेतु कटिबद्ध होना पड़ता है। इन व्यक्तियों तक प्रशासन के माध्यम से कल्याणकारी कार्यक्रम पहुंचाने के लिए आवश्यक है कि नियंत्रणकर्त्ता एवं प्रशासकों की उन कार्यक्रमों तथा योजनाओं को प्रभावशाली ढंग से लागू करने के प्रति प्रतिबद्धता हो।

9. तात्कालिकता : विकासशील राष्ट्रों में लोक कल्याण हेतु प्रशासनिक निर्णय एवं नीतियाँ तात्कालिकता के आधार पर तय होती है। विकास प्रशासन द्वारा समय, स्थान तथा परिस्थिति का बहुत महत्व दिया जाता है। अतः आवश्यकता के अनुसार तत्काल निर्णय करना विकास प्रशासन हेतु अनिवार्य है।

10. जन सहभागिता : विकास कार्यों की सफलता हेतु विकास

कार्यक्रमों में आम जनता की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है चूँकि ये कार्यक्रम जनता हेतु बनाए जाते है , अतः इनकी भागीदारी के अभाव में ये निष्फल हो जाते है। उदाहरण के लिए **मनरेगा** (महात्मा गांधी, राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम) एवं **जनधन** (प्रधानमंत्री जनधन योजना का उद्देश्य देश में सभी व्यक्तियों के बैंक में खाते खुलवाकर वित्तीय समावेशन के लक्ष्य की प्राप्ति करना है) आदि राष्ट्रीय कार्यक्रमों में जनता की अच्छी सहभागिता रही। अतः इनके परिणाम भी सुखद रहे।

विकास प्रशासन बनाम परम्परागत प्रशासन (Development Administration Vs Traditional Administration) :

कुछ विद्वानों ने विकास प्रशासन को परम्परागत प्रशासन (गैर विकास) प्रशासन या सामान्य प्रशासन या नियामक प्रशासन से अलग रूप में अवधारणाबद्ध करने का प्रयास किया है। उनके अनुसार विकास प्रशासन भिन्नताओं से भरा लोक प्रशासन है। वे कहते है कि ये दोनों बेहद महत्वपूर्ण रूपों में एक दूसरे से भिन्न है। संक्षेप में इने भिन्नताओं को अग्रलिखित रूप में दर्शाया जा सकता है।

व्यवहार में पारम्परिक प्रशासन भी आवश्यक है, क्योंकि जब तक कानून एवं व्यवस्था की स्थापना नहीं हो तब तक विकास करना असम्भव है। अतः इस बात पर जोर देने की जरूरत है कि विकास प्रशासन और प्रारम्परिक प्रशासन एक दूसरे के पूरक हो। विलियम वुड तो विकास प्रशासन एवं पारम्परिक प्रशासन में कोई अन्तर ही नहीं मानते है। एक के अभाव में दूसरा भी कायम नहीं रह सकता इसलिए दोनों के बीच भेद करना अवास्तविक, अव्यावहारिक और अतिसरल होगा "विकास प्रशासन केवल विकासशील देशों के प्रशासन से सम्बद्ध है, यह सोच सिर्फ विकास प्रशासन की अवधारणा की उपयोगिता और विकासशील देशों के तुलनात्मक विश्लेषण में इसकी उपयोगिता को कम करती है। विकास प्रशासन की आवश्यकता प्रत्येक प्रकार की अर्थव्यवस्था एवं शासन व्यवस्था में रहती है। चूँकी विकास की कोई सीमा नहीं होती तथा विकास की सम्भावनाएं सदैव बनी रहती है अतः विकास प्रशासन भी सदैव बना रहता है।

निष्कर्ष :

विकास प्रशासन सरकार के वैकासिक कार्यों, कार्यक्रमों, योजना तथा परियोजनाओं पर जोर देता है, जिससे आज प्रत्येक शासन व्यवस्था के लिए यह अपरिहार्य हो गया है। विकास प्रशासन विकास के लिए प्रशासन का निर्माण है। भारत में स्वतन्त्रता से पूर्व विकास प्रशासन नहीं था। यही कारण है कि

विकास प्रशासन	प्रशासनिक प्रशासन
1. यह परिवर्तन निर्देशित है।	1. यह यथास्थिति निर्देशित है।
2. यह गतिशील और लचीला है।	2. यह पदसोपान क्रम वाला और कठोर है।
3. यह लक्ष्य प्राप्ति की प्रभाविता पर जोर देता है।	3. यह मितव्ययता पर जोर देता है।
4. इसके उद्देश्य जटिल और अनेक है।	4. इसके उद्देश्य सरल है।
5. इसका सरोकार नई जिम्मेदारियों से है।	5. इसका सरोकार दैनिक सामान्य कार्यों से है।
6. यह विकेन्द्रीकरण में विश्वास रखता है।	6. यह केन्द्रीकरण में विश्वास रखता है।
7. यह योजना पर बहुत निर्भर करता है।	7. यह योजना पर उतना निर्भर नही करता है।
8. यह रचनात्मक और आविष्कारक है।	8. यह संगठन बदलाव का विरोध करता है
9. यह प्रशासन की जनवादी और सहभागिता पूर्ण पद्धति को लागू करता है।	9. यह प्रशासन की अधिकारिक और निर्देशात्मक पद्धति को लागू करता है।
10. इसके कामों का विस्तार क्षेत्र व्यापक है।	10. इसके कामों का विस्तार क्षेत्र सीमित है।
11. यह निश्चित समय में कार्यो को पूरा करता है।	11. यह पूर्णतः निर्देशित नहीं है।
12. यह बहिर्मुखी है।	12. यह अन्तर्मुखी है।

हमारी आजादी के बाद पंचवर्षीय योजनाओं को विकास का महत्वपूर्ण बनाया एवं विकास करने हेतु अनेक नई संस्थाओं, विभागों एवं नए प्रकार के अधिकारियों –कर्मचारियों को देश में बढ़ावा दिया है। विकास प्रशासन ने विकास एवं देश की उन्नति में आने वाली समस्याओं एवं इनके निदान के आवश्यक उपायों का व्यापक विश्लेषण किया है। इसके पूर्व विकास एवं कल्याण सरकारी कार्य क्षेत्र में नहीं आते थे । अग्रलिखित बिन्दुओं से विकास प्रशासन की प्रासंगिकता एवं उपादेयता (महत्त्व) सिद्ध होती है :

1. विकास प्रशासन से लोक प्रशासन के सिद्धान्त (विषय के रूप में) एवं व्यवहार (प्रशासन का क्रियान्वयन पक्ष) के विकास में उल्लेखनीय परिवर्तन आए है। इससे लोक प्रशासन के क्षेत्र में लोकनीति, मानवाधिकार, सतत् विकास एवं समावेशी विकास आदि महत्वपूर्ण घटकों का प्रवेश हुआ है।
2. कार्यरत प्रशासकों एवं शिक्षाविदों के लिए इसका प्रत्यक्ष महत्त्व है। चूँकि ये ही विकास की समस्याओं एवं विकास प्रक्रिया द्वारा उत्पन समस्याओं में प्रत्यक्ष रूप से उलझे है।
3. विकास प्रशासन ने विकास के पश्चिमी प्रतिमान की अपर्याप्तताओं की ओर सफलतापूर्वक ध्यान आकृष्ट किया है जिससे विकास हेतु स्वजात (Indigenous) प्रयासों को बल एवं सफलता मिली है।
4. विकास प्रशासन के आधार पर ही आज विभिन्न विकासशील देश तीव्र गति से आगे बढ़ रहे है। चीन तथा भारत की विकास दर आज 9 से 10 प्रतिशत की रफ्तार से बढ़ रही है सभी ब्रिक्स देशों (यह ब्राजील, रूस, भारत, चीन तथा दक्षिण अफ्रीका का विकास हेतु बना संगठन है) में विकास प्रशासन ने महत्वपूर्ण कार्य किया है।
5. विकास प्रशासन के कारण अनेकानेक नई व्यवस्थाओं की शुरूआत हुई है। इससे लोक कल्याणकारी राज्य तथा भारत में संविधान के नीति निदेशक तत्वों को साकार करने में सफलता मिली है। इससे देश में प्रशासनिक तंत्र का सशक्तीकरण हुआ है। इससे नए प्रकार के सामाजिक मूल्य तथा परम्पराओं का विकास हुआ है साथ ही अनेक दबाव समूह एवं गैर सरकारी संगठनों (NGOs) को आगे बढ़ने का अवसर मिला है । इससे जनता में राजनीतिक चेतना एवं जनसहभागिता का प्रसार हुआ है।

व्यवहार में विकास के बिना अधिकार की व्यावहारिक व्याख्या संभव नहीं है। विकास प्रशासन में देश को सकारात्मक ढंग से बदलने की क्षमता है। अतः इसका महत्व बना रहेगा। विकास प्रशासन के साथ प्रशासनिक विकास का भी महत्व है। ये परस्पर पूरक है। **आगामी अध्याय में प्रशासनिक विकास के सम्बन्ध में चर्चा की गई है।**

महत्त्वपूर्ण बिन्दु :

1. विकास प्रशासन मानव जीवन के प्रत्येक पहलू से जुड़ा हुआ है।
2. विकास प्रशासन का अर्थ विकास से सम्बन्धित प्रशासन से लिया जाता है।
3. सामान्य अथवा नियामकीय प्रशासन पारम्परिक प्रशासन होता है। इसका मुख्य लक्ष्य राज्य में कानून एवं व्याख्या बनाए रखना होता है।
4. विकास प्रशासन शब्द का प्रयोग प्रथम बार एक भारतीय यू.एल.गोस्वामी द्वारा 1955 में किया गया।
5. विकास प्रशासन का जनक जार्ज गैंट को माना जाता है।
6. विकास प्रशासन की सबसे विस्तार से व्याख्या एडवर्ड वीडनर ने की है।
7. 1950 तथा 1960 के दशक में विकास प्रशासन लोक प्रशासन के सहायक विकास कर रहे है। इन्हें अभी सामाजिक–आर्थिक–राजनीतिक विकास करना है।
8. विकास प्रशासन में विकास का अर्थ निरन्तर आगे बढ़ना तथा प्रशासन का अर्थ सेवा करना है।
9. वीडनर के अनुसार विकास प्रशासन राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक प्रगति के लिए संगठन का मार्गदर्शन करता है।
10. विकास प्रशासन परिवर्तनशील, विकासात्मक, नवाचारोन्मुख, प्रजातान्त्रिक, आधुनिक, परिणामोन्मुखी, प्रतिबद्ध एवं जन सहभागी होता है।
11. वर्तमान में ब्रिक्स देशों (BRICS) ने विकास प्रशासन के माध्यम से उल्लेखनीय प्रगति की है।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

बहुचयनात्मक प्रश्न :

1. विकास प्रशासन शब्द का प्रथम बार प्रयोग किसने किया?
(अ) यू.एल.गोस्वामी (ब) विलियम वुड
(स) फैरल हैडी (द) महात्मा गाँधी।

2. विकास प्रशासन का जनक किसे कहते है ?
(अ) फैरल हैडी (ब) वीडनर
(स) जार्ज गैन्ट (द) फ्रेड रिग्ज

3. विकास प्रशासन की विस्तृत व्याख्या किसने की है ?
(अ) यू.एल.गोस्वामी (ब) फेयोल
(स) फ्रेड रिग्ज़ (द) वीडनर

4. विकास प्रशासन की विशेषता है।
(अ) परिवर्तनशील (ब) प्रजातांत्रिक
(स) आधुनिक (द) सभी

5. निम्नलिखित में कौनसी विकास प्रशासन की विशेषता नहीं है?
(अ) जन सहभागिता (ब) रचनात्मकता
(स) अंतर्मुखी (द) प्रतिबद्धता

6. विकास प्रशासन किन किन देशों में अपनाया जाता है ?
(अ) विकसित (ब) विकासशील
(स) अल्प विकसित (द) सभी।

7. पारम्परिक प्रशासन के लक्षण है।
(अ) यथा स्थिति निर्देशित (ब) कठोर
(स) केन्द्रीकृत (द) सभी

8. ब्रिक्स (BRICS) संगठन में कौनसा देश शामिल नहीं है?
(अ) इण्डोनेशिया (ब) रूस
(स) चीन (द) भारत

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न :

1. भारत में विकास प्रशासन शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया ?
2. विकास प्रशासन की अवधारणाओं का विस्तृत ढंग से किसने विकास किया ?
3. विकास का अर्थ समझाइये।
4. विकास प्रशासन में प्रतिबद्धता से क्या अभिप्राय है ?
5. विकास प्रशासन की कोई दो विशेषता बताइये ।
6. विकास प्रशासन की परिभाषा दीजिए।
7. विकास प्रशासन का प्रमुख लक्ष्य बताइये।
8. परम्परागत प्रशासन किसे कहते है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न :

1. विकास प्रशासन के उद्भव के कारण बताइये।
2. विकास प्रशासन का अर्थ तथा परिभाषा लिखिए।
3. पारम्परिक प्रशासन किसे कहते है ?
4. विकास प्रशासन एवं पारम्परिक प्रशासन में अन्तर बताइये।
5. विकास प्रशासन की किन्हीं पाँच विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
6. विकास प्रशासन की उपादेयता समझाइये।

निबन्धात्मक प्रश्न :

1. विकास प्रशासन का अर्थ, परिभाषा एवं उद्भव बताइये।
2. विकास प्रशासन की अवधारणा स्पष्ट करते हुए इसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
3. विकास प्रशासन एवं पारम्परिक प्रशासन के सम्बन्धों पर प्रकाश डालिए।
4. विकास प्रशासन का महत्त्व (उपादेयता) समझाइये।

उत्तरमाला :

1. (अ)	2. (स)	3 (द)	4. (द)
5. (स)	6. (द)	7.(द)	8. (अ)

अध्याय 11
प्रशासनिक विकास
(Administrative Development)

सुदृढ़ एवं सक्षम प्रशासन हेतु प्रशासनिक विकास अत्यावश्यक घटक है। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् विश्व के बहुत से देशों में प्रशासन की कार्य कुशलता में सुधार करने हेतु योजनात्मक, व्यवस्थित एवं संगठित प्रयास किए जा रहे हैं। पूर्व अध्याय में आपने पढ़ा कि योजना एवं परियोजनाओं के क्रियान्वयन से जो व्यवस्था विकास करती है उसे विकास प्रशासन कहते है।

विकास हेतु संलग्न प्रशासनिक इकाईयाँ एवं कार्मिक ही विकास प्रशासन कहलाते है, एवं टिकाऊ, समयानुकूल व परिवर्तनशाली विकास हेतु सक्षम प्रशासनिक कार्यकारिणी की आवश्यकता है, अतः विकास कार्य में संलग्न अधिकारियों एवं कर्मचारियों का व्यवस्थित विकास अत्यधिक आवश्यक हैं , यही प्रशासनिक विकास कहलाता है। व्यवहार में प्रशासनिक विकास, विकास प्रशासन का ही भाग है, क्योंकि विकास प्रशासन की सफलता विकसित प्रशासनिक तंत्र पर ही निर्भर है। उदाहरण के लिए विद्यालय में कार्यरत समस्त स्टाफ विकास प्रशासन का अंग है क्योंकि ये विद्यार्थियों को पढ़ाकर उनके विकास के साथ राष्ट्रीय विकास के कार्य में लगे हुए है, एवं इन शिक्षकों के दक्ष एवं प्रशिक्षित होने से विद्यार्थियों को अधिक ज्ञान प्राप्त होगा तो ऐसे दक्ष एवं प्रशिक्षित शिक्षक प्रशासनिक विकास के अंग बन जाते है। अतः विकास हेतु इसे प्राप्त करने वाले प्रशासनिक तंत्र का विकास करना विकास प्रशासन कहलाता है।

अवधारणा :

विकास प्रशासन शब्द को दो परस्पर सम्बन्धित अर्थो में प्रयुक्त जाता है।

1. यह विकास कार्यक्रमों के प्रशासन तथा बड़े संगठनों, विशेषतया सरकारी संगठनों द्वारा प्रयोग में लाई विधियों तथा उनके वैकासिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए निर्मित नीतियों और योजनाओं के कार्यान्वयन का उल्लेख करता है। (अर्थात् विकास प्रशासन)
2. इसमें प्रशासनिक तंत्र की क्षमताओं को सुदृढ़ करने का भाव सम्मिलित रहता है। (अर्थात प्रशासनिक विकास)

प्रशासनिक विकास, विकास प्रशासन का एक आवश्यक अंग है। यह विकासशील राष्ट्रों में चलाए जा रहे व्यापक विकास कार्यों का ही एक भाग है जो इस मान्यता पर आधारित है कि विकास कार्यकुशलता, क्षमता तथा प्रक्रियाओं को इस ढंग से विकसित किया जाए कि वे अधिक प्रभावी रूप में योगदान दे सकें। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में केवल भौतिकवाद का ही प्रसार नहीं होता है बल्कि यह विकासशील समाजों के मूल्यों, संरचनाओं तथा कार्यप्रणालियों में मौलिक परिवर्तन में भी अगुआ है। आधुनिकीकरण, सभी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा प्रशासनिक गतिविधियों में अधिकाधिक विवेक के प्रयोग से सम्बन्धित प्रक्रिया का नाम है। विकास तथा आधुनिकीकरण की ये प्रक्रियाए समाज की सभी व्यवस्थाओं को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करती है । विकसित एवं विकासशील दोनों प्रकार की व्यवस्थाओं में प्रशासनिक तंत्र परिवर्तन का एक सशक्त अस्त्र बन चुका है। अतः यह आवश्यक है कि यह अस्त्र भी पर्याप्त धारदार एवं विकसित हो। किन्तु विडम्बना यह है कि इन देशों का प्रशासन ही सर्वाधिक उपेक्षित, अकुशल तथा निष्प्रभावी बना हुआ है।

प्रशासनिक विकास की आवश्यकता :

प्रशासनिक विकास की आवश्यकता के अग्रलिखित कारण है :

1. विकासशील देशों का प्रशासन पश्चिमी राष्ट्रों की विरासत का पर्याय है अथवा इन देशों का लोक प्रशासन पश्चिमी देशों के ढांचे के अनुरूप बनाया गया है । विकासशील देशों का प्रशासन स्वदेशी न होकर पाश्चात्य देशों की नकल होने के कारण सम्बन्धित विकासशील

   देश की सामाजिक व्यवस्था से मेल नहीं खाता है अतः यह आवश्यक हो जाता है कि ऐसा प्रशासन उस देश की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित किया जाए।
2. विकास प्रशासन की सफलता का आधार प्रशासनिक कुशलता है तथा प्रशासनिक कुशलता प्रशासनिक विकास का मुख्य चिन्तन बिन्दु है। यदि विकास प्रशासन को लक्ष्योन्मुखी तथा कार्योन्मुखी सिद्ध होना है, तो प्रशासनिक विकास आवश्यक है।
3. विकासशील देशों की प्रशासनिक व्यवस्थाएं, राजनीतिक स्वतंत्रता से पूर्व नियामकीय प्रकृति की रही है जिनमें विकास के प्रति अनिच्छा तथा अक्षमता दोनों व्याप्त है। साथ में इन देशों के लोक सेवकों की मानव संसाधन क्षमताएँ भी उत्कृष्ट श्रेणी की नहीं है अतः सम्पूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार आवश्यक प्रतीत होता है।
4. सम्पूर्ण विकास प्रशासन की सफलता प्रशासनिक विकास पर निर्भर करती है अतः प्रशासनिक विकास पर गंभीरता से अध्ययन उपयोगी है। प्रशासन का समुचित विकास हुए बिना विकास प्रशासन की सफलता संदिग्ध है।

अर्थ एवं परिभाषाएँ :

नवीन मान्यताओं तथा विकासोन्मुख लक्ष्यों के परिणाम स्वरूप प्रशासनिक संरचनाओं तथा प्रक्रियाओं में किए जाने

वाले सुनियोजित परिवर्तनों को प्रशासनिक विकास कहते है।

फेड़ रिग्ज़ के अनुसार : प्रशासनिक विकास निर्दिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उपलब्ध साधनों को उपयोग करने की बढ़ती हुई प्रभावशीलता का प्रतिमान है।

जे.एन. खोसला के शब्दों में : नौकरशाही की नीतियों, कार्यक्रमों, क्रियाविधियों, कार्य पद्धतियों, संगठनात्मक संरचनाओं, तथा भर्ती प्रतिमानों, विभिन्न प्रकार के विकास, सेवीवर्ग तथा प्रशासन के ग्राहकों के साथ सम्बन्ध प्रतिमानों की संख्या एवं विशेषताओं में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार के सुधार प्रशासनिक विकास का पयार्य है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रशासनिक विकास :

1. विकास प्रशासन का एक अभिन्न अंग है।
2. प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार तथा विकास को महत्व देता है। जिससे विकास प्रशासन के लक्ष्यों की प्राप्ति में प्रशासनिक व्यवस्था सार्थक भूमिका निभा सके।
3. प्रशासन की परम्परागत प्रक्रियाओं, पद्धतियों, नियमों तथा मापदंड़ों में समयानुकूल विकास का हिमायती है।
4. प्रशासनिक क्षमता एवं कुशलता में वृद्धि करना चाहता है।
5. इस मान्यता पर आधारित है कि कोई भी प्रशासनिक व्यवस्था तभी प्रभावशाली एवं गतिशील रह सकती है, जब तक की समयानुकूल परिवर्तन एवं सुधार होते रहें। प्रशासनिक विकास का प्रथम साधन प्रशासनिक सुधार है। प्रशासनिक सुधार वे सुनियोजित प्रयास होते है जो प्रशासनिक तंत्र में समयानुकूल परिवर्तनों एवं संशोधनों हेतु किये जाते है।

गेराल्ड केडन के अनुसार : प्रशासनिक सुधारों का अर्थ उस प्रक्रिया से है जिसमें प्रशासनिक व्यवस्था की कार्य कुशलता एवं गुणवत्ता में वृद्धि करने के लिए कृत्रिम (सुनियोजित) ढंग से अर्थात् जानबूझकर परिवर्तन किये जाते है।

प्रशासनिक सुधारों के माध्यम से प्रशासनिक संरचना, संगठन प्रक्रियाओं, नियमों, कानूनों, व्यवहार, लक्ष्यों तथा कार्यशैली में परिवर्तन लाने का प्रयास किये जाते है। बहुत से विद्वान प्रशासनिक कमियों अथवा बुराइयों को दूर करने को प्रशासनिक सुधार मानते है। सामान्यतः प्रशासनिक व्यवस्थाओं की प्रमुख विशेषताओं में निर्देशित परिवर्तन लाना प्रशासनिक सुधार माने जाते है। प्रशासनिक सुधारों के लिए उपयुक्त परिस्थितियाँ, अभिप्रेरणा, संयम, राजनीतिक इच्छाशक्ति, वित्तीय साधनों की उपलब्धता तथा जनमत का सहयोग इत्यादि अपेक्षित है लेकिन भारत सहित अधिसंख्य विकासशील देशों में प्रशासनिक सुधारों के या तो प्रयास ही नहीं हो पाते है अथवा सुनियोजित ढंग से बाधाऐं उत्पन्न कर दी जाती है। प्रशासनिक विकास का दूसरा साधन नवाचार (Innovation) है। **थाम्पसन के अनुसार** –"नवाचार, नयें विचारों, प्रक्रियाओं और सेवाओं का आविष्कार करना, स्वीकृति प्रदान करना और उनको व्यवहार में लाना है" यह विचार धारा अनुकूलन पर निर्भर करती है। नवाचार अर्थात् नये आचार (व्यवहार) के लिए तीन तत्त्व आवश्यक है :

(1) नई वस्तु का आविष्कार या नये विचार या विधि का जन्म हो,
(2) इसे स्वीकृति मिले।
(3) स्वीकृति के पश्चात् व्यवहार में लाया जाए।

परम्परागत समाजों तथा समस्यागत प्रशासन में नवाचारों का प्रयोग आसान नहीं है। वल्कि राजनीतिज्ञों व प्रशासकों की अनिच्छा, सूचना एवं पहल क्षमता का अभाव, अवसरवादी स्वभाव, कठोर नौकरशाही, जनजागरूकता की कमी तथा प्रशासन का आन्तरिक पर्यावरण बाधाएँ उत्पन्न करते है।

प्रशासनिक विकास का तृतीय साधन स्वतः प्रशासनिक उद्विकास से सम्बन्धित है। अर्थात् यह प्रक्रिया बिना किसी सुनियोजित प्रयास के स्वतः चलती रहती है। समय की परिस्थितियों भी प्रशासन को विकसित कर देती है प्रशासन का पारिस्थितिकीय दृष्टिकोण भी यही मानता है कि बाह्य वातावरण जैसे समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था तथा विज्ञान इत्यादि लोक प्रशासन को प्रभावित करते रहते है। तब प्रशासन भी इन कारकों को प्रभावित करता रहता है। विकास प्रशासन की प्रकृति एवं आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशासनिक व्यवस्था भी स्वतः ही विकसित हो जाती है।

विकास प्रशासन तथा प्रशासनिक विकास में अन्तर :

विकास प्रशासन (प्रशासन द्वारा किये जाने वाला विकास) तथा प्रशासनिक विकास (प्रशासनिक क्षमताओं में वृद्धि) परस्पर अन्तः सम्बन्धित अवधारणाऐं है। विकास प्रशासन, सामाजिक आर्थिक उन्नति, नियोजित परिवर्तन तथा जनकल्याण के लिए निर्मित नीतियों तथा परियोजनाओं का संचालन एवं नियंत्रणकर्त्ता अभिकरण है। वर्तमान में विकास कार्यक्रमों का प्रारूप नियोजित प्रणाली पर तैयार होता है, तथा निर्धारित किए गए लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु विशिष्ट क्षेत्रों की परियोजनाएँ निर्मित की जाती है। इसलिए कहा जाता है कि विकासशील राष्ट्रों में परियोजन प्रशासन ही विकास प्रशासन है। यद्यपि विकास प्रशासन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक तथा बहुआयामी है। तथापि विकास कार्यों तथा सामाजिक – आर्थिक परिवर्तन के कार्यक्रमों के संचालन से सम्बन्धित प्रशासनिक व्यवस्था विकास प्रशासन का पर्याय बन चुकी है। जहां तक प्रशासनिक विकास का सम्बन्ध है यह विकास प्रशासन का एक भाग या पूर्व शर्त है। विकास प्रशासन उसी स्थिति में सफलता पूर्वक कार्य कर सकता है, जबकि उसमें विकास कार्यों को सफलता पूर्वक सम्पादित करने की प्रशासनिक क्षमता तथा योग्यता हो। इसलिए विकास कार्यों में संलग्न प्रशासनिक संगठनों, अभिकरणों तथा कार्मिकों को विकास प्रशासन की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करना ही प्रशासनिक विकास है। प्रशासनिक कार्यकुशलता एवं प्रभावशीलता में वृद्धि करके ही प्रशासनिक विकास का उद्देश्य पूरा हो सकता है।

विकास प्रशासन	प्रशासनिक विकास
1. देश के सामाजिक – आर्थिक विकास एवं उन्नति के लक्ष्यों की प्राप्ति में संलग्न प्रशासनिक व्यवस्था, विकास प्रशासन है। 2. लोक कल्याणकारी राज्य के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विकास प्रशासन आवश्यक है। 3. यह एक व्यापक प्रशासनिक क्षेत्र का भाग है। 4. विकास प्रशासन, प्रशासनिक विकास को आधार प्रदान करता है। 5. यह प्रशासन के द्वारा विकास करना है। 6. विकास प्रशासन सामाजिक आर्थिक राजनीतिक सांस्कृतिक तथा प्रशासनिक इत्यादि कई आयामों से सम्बद्ध है।	1. देश के सामाजिक –आर्थिक विकास तथा उन्नति के लक्ष्यों के लिए प्रशासनिक व्यवस्था को सक्षम बनाना तथा उनमें समयानुकूल परिवर्तन लाना प्रशासनिक विकास है। 2. विकास प्रशासन के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रशासनिक विकास आवश्यक है। 3. यह इस व्यापक प्रशासनिक क्षेत्र का छोटा पक्ष या उसकी आंतरिक गतिविधि है। 4. प्रशासनिक विकास, विकास प्रशासन की सफलता का आधार बनता करता है। 5. यह प्रशासन का विकास है। 6. प्रशासनिक विकास स्वयं विकास प्रशासन का एक भाग है।

विकास प्रशासन तथा प्रशासनिक विकास के मध्य अन्तरसम्बन्ध :

विकास प्रशासन तथा प्रशासनिक विकास के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध है। कार्यात्मक आधार पर विकास प्रशासन तथा प्रशासनिक विकास के क्रम में रिग्ज़ का मानना है कि इन दोनों पक्षों की परस्पर सम्बद्धता में अण्डे और मुर्गी जैसा कार्य–कारण भाव है सामान्य रूप से प्रशासन में महत्वपूर्ण परिवर्तन पर्यावरणीय आयामों में परिवर्तन के बिना नहीं लाये जा सकते हैं और इसी प्रकार पर्यावरण तब तक परिवर्तित नहीं हो सकता है जब तक कि विकास कार्यक्रमों के प्रशासन को सुदृढ़ एवं कुशल नहीं बनाया जाता है। परिवर्तन एक शाश्वत प्रक्रिया है लेकिन यह कई पक्षों की गति से प्रभावित है। विकास प्रशासन समाज के कल्याण, विकास तथा सुरक्षा हेतु परिवर्तन के प्रयास करता है किन्तु परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को सक्षम सिद्ध करने के लिए स्वाभाविक रूप से प्रशासनिक विकास अनिवार्य हो जाता है। कार्योन्मुख तथा लक्ष्योमुख प्रशासन प्रणाली से युक्त विकास प्रशासन, प्रगतिशील राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक लक्ष्यों की उपलब्धि की और प्रशासनिक संगठनों के मार्ग दर्शन की प्रक्रिया का रूप धारण कर लेता है। मार्ग दर्शन करने से पूर्व यह स्वाभाविक रूप से आवश्यक है कि यह स्वयं को सक्षम व योग्य सिद्ध हो अन्यथा असफलता का सारा दायित्व मार्गदर्शक का ही होगा । यदि विकास प्रशासन योजनाबद्ध परिवर्तन का प्रशासन है तो यह भी आवश्यक है कि वह योजना निर्माण तथा क्रियान्वयन के सभी पक्षों बाधाओं, समस्याओं तथा संभावित संकटों से परिचित हों। इसलिए यह प्रयास किया जाता है कि विकास प्रशासन की प्रक्रिया में प्रशासनिक विकास भी साथ–साथ होता रहे। भारत सहित अधिकांश विकासशील राष्ट्रों में अभी तक पूरी तरह से यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि विकास प्रशासन की गति तथा प्रशासनिक विकास की गति में पूर्ण सामंजस्य किस प्रकार स्थापित हो । बहुत से आलोचक यह मानते है कि विकास प्रशासन तथा प्रशासनिक विकास पूर्णतया दो पृथक अवधारणाएं है जिन्हें परस्पर एकता के आधार पर विश्लेषित न किया जाए किन्तु वास्तविकता यही है कि तीसरी दुनिया के देशों में इन दोनों अवधारणाओं को पृथक करना सहजता से सभंव नहीं है इस सन्दर्भ में फ्रेड रिग्ज़ का कथन कि विकास प्रशासन एवं प्रशासनिक विकास के मुर्गी एवं अण्डे वाला सम्बन्ध सही प्रतीत होता है। नई रचना हेतु मुर्गी एवं अण्डा दोनों की आवश्यकता होती है तथा दोनों परस्पर पूरक है। क्योंकि दोनों ही एक दूसरे के कारण भी है तथा कार्य भी। इसी प्रकार विकास प्रशासन तथा प्रशासनिक विकास भी परस्पर पूरक है। फलतः विकास प्रशासन तथा प्रशासनिक विकास एक ही सिक्के के दो पहलु है, अतः दोनों की विशेषताए भी एक समान है।

प्रशासनिक विकास के साधन :

प्रशासन द्वारा निरन्तर स्वयं का विकास किया जाता है व्यवस्था के स्वास्थ्य हेतु यह कारण आवश्यक भी होता है इस हेतु प्रशासन अनेक साधनों का प्रयोग करता है इसमें प्रमुख साधन अग्रलिखित है :

1.प्रशासनिक सुधार : प्रशासन में वांछित सुधार हेतु समय–समय पर संरचनात्मक, प्रक्रियात्मक एवं व्यवहारात्मक परिवर्तन किये जाते है। भारत में स्वतन्त्रता के बाद से ही सरकार निरन्तर प्रशासनिक सुधार करती आई है। इस हेतु सरकार विभिन्न समितियों, आयोग आदि का गठन करती है। भारत में लोक प्रशासन को अधिक कारगर बनाने हेतु सुझाव देने के लिए भारत सरकार द्वारा प्रथम प्रशासनिक सुधार आयोग का गठन श्री मोरारजी देसाई की अध्यक्षता में 5 जनवरी 1966 को किया गया । दूसरा प्रशासनिक सुधार आयोग 31 अगस्त 2005 को श्री वीरप्पा मोइली की अध्यक्षता में गठित किया गया । इनके द्वारा दिए गए सुझावों को स्वीकार कर प्रशासनिक तंत्र में समयानुसार अनेक सुधार किये गये है।

2. नवाचार : परम्परागत समाजों में नवाचार लाकर ही प्रशासनिक विकास किया जा सकता है। आज हमारी सरकार डिजीटल गवर्नमेंट बनती जा रही है। आज बहुत सी सुविधाए ऑन लाइन उपलब्ध है राजस्थान में आम जनता की शिकायतों के निवारण हेतु सम्पर्क समाधान पोर्टल बनाया गया है।

3. पारिस्थितिकी : प्रशासन का बाह्य वातावरण जैसे संस्कृति, मूल्य, समाज, आर्थिक विकास, राजनीतिक परिस्थितियाँ आदि प्रशासन को प्रभावित करती है। स्वयं प्रशासन भी इन कारकों को प्रभावित करता है। व्यवहार में जैसा विकास करना हो उसके अनुरूप प्रशासनिक व्यवस्था का विकास करना आवश्यक होता

है।

प्रशासनिक विकास की समस्याएँ : विकासशील देशों का प्रशासनिक ढंग अनेक प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त रहता है। ये समस्याए प्रशासनिक विकास की प्रभावशीलता में कमी कर देते है। प्रमुख समस्याए अग्रलिखित है :

1. **ऐतिहासिक समस्याएँ :** अधिकतर विकासशील देशों पर विकसित राष्ट्रों का आधिपत्य रहा है। जिससे इनके विकास में उपनिवेशवादी विरासतें बाधा उत्पन्न करती है।
2. **संरचनात्मक एवं संगठनात्मक समस्याएँ :** प्रत्येक देश का प्रशासन निश्चित संरचना से संचालित होता है । अनेक बार इन संरचनाओं में निहित कमजोरियाँ प्रशासनिक सक्रियता में कमी कर देती है। जैसे अनावश्यक एवं लम्बा पदसोपान होने से निर्णय होने में विलम्ब उत्पन्न होता है।
3. **भ्रश्टाचार की समस्या :** विकासशील देश इस समस्या से अत्यधिक ग्रस्त है। इसमें भाई–भतीजावाद, पक्षपात, रिश्वत, नैतिक मूल्यों में कमी आदि है।
4. **अनावश्यक राजनीतिक दखलंदाजी :** विकासशील देशों में राजनीतिज्ञों द्वारा बार–बार प्रशासनिक तंत्र में दखल दिया जाता है जिससे प्रशासनिक तंत्र में कमजोरियाँ आती है।

उपर्युक्त के अलावा परिचालनात्मक समस्याएं, कार्मिक प्रशासन सम्बन्धी समस्याएं, प्रक्रियात्मक एवं व्यवहारात्मक समस्याऐं आदि प्रमुख समस्याएं है।

निष्कर्ष : आज प्रशासनिक विकास की उपादेयता दिन–प्रति दिन बढ़ती जा रही है वर्तमान युग तकनीकी युग है जिसमें प्रशासन का भी आधुनिकीकरण अनिवार्य है सुशासन एवं विधि के शासन की स्थापना प्रशासनिक विकास के माध्यम से ही सम्भव है। आज प्रशासनिक विकास के समक्ष अनेक चुनौतियाँ है यथा –

1. प्रशासन पर गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदायगी हेतु बढ़ता दबाव ।
2. सरकार का बढ़ता आकार।
3. सूचना एवं संचार क्रान्ति के परिवर्तनों को शीघ्र अंगीकार करने का सामर्थ्य विकसित करना। आज सरकार के समक्ष ऐसे विभिन्न मोबाइल एप्लिकेशन का विकास करने की चुनौती है जिनसे नागरिकों को घर बैठे सही एवं शीघ्र सेवा प्राप्त हो सके। भारत में शासन में डिजीटल क्रान्ति की शुरूआत हो गई है। आज सरकार के अधिकतर विभाग तथा संस्थाएं न केवल इन्टरनेट पर उपलब्ध है वरन् अब ये फेसबुक, ट्विट्र आदि सोशल साइट्स पर भी उपलब्ध है। ऑनलाइन वित्तीय लेन–देन हेतु भारत सरकार ने भीम एप्लीकेशन का विकास किया है।
4. नियोजन, समन्वय, नियन्त्रण, पर्यवेक्षण, विकेन्द्रीकरण की निरन्तर बढ़ती आवश्यकता।
5. मानव विकास सूचकांक में उच्च स्थान हासिल करने की चुनौती, सामाजिक न्याय की स्थापना तथा कमजोर वर्ग एवं दिव्यागों (निशक्तजन) हेतु लागू प्रावधानों को बेहतर ढंग से क्रियान्वयन करने की चुनौती।
6. आज आर्थिक समस्याएं प्रशासन की भी समस्याए है। अतः जब तक देश में गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, अशिक्षा आदि सामाजिक तंत्र का ढ़ाचा कमजोर रहेगा, तब तक प्रशासनिक विकास की महत्ता बनी रहेगी ।
7. निरन्तर प्रशासनिक सुधार की चुनौती।
8. प्रशासन को परिवर्तन अभिमुख एवं विकास अभिमुख की चुनौती।

उपर्युक्त चुनौतियों के बावजूद प्रशासनिक तंत्र के विकास प्रशासन में भागीदारी का निर्वहन कर रहा है। नीतियों का व्यवस्थित ढंग से क्रियान्वयन प्रशासनिक द्वारा ही सम्भव है । समावेशी एवं सतत् विकास (Inclu & Sustainable Development) को साकार कर सुदृढ़ प्रशासनिक तंत्र की आवश्यकता है। जिसके प्रशासनिक विकास अनिवार्य है।

महत्वपूर्ण बिन्दु :

1. विकास प्रशासन हेतु प्रशासनिक विकास अनिवार्य है
2. प्रशासनिक विकास में प्रशासनिक तंत्र की क्षमताओं को सुदृढ़ करना शामिल है।
3. जिन देशों में अभी पिछड़ापन है वहाँ विकास प्रशासन प्रशासनिक विकास दोनों की आवश्यकता है।
4. प्रशासनिक विकास प्रशासन की कुशलता एवं क्षमता वृद्धि करना है।
5. भारत में प्रशासनिक विकास हेतु अभी तक अनेक समीतियों एवं आयोगों का गठन किया गया है। इनमें प्रथम एवं द्वितीय
   प्रशासनिक सुधार आयोग प्रमुख है।
6. विकास प्रशासन तथा प्रशासनिक विकास में पारस्परिक सम्बन्ध को मुर्गी एवं अण्डें का सम्बन्ध फ्रेड रिग्ज़ ने कहा हैं।
7. भीम वित्तीय लेन–देन हेतु विकसित सरकारी मोबाइल एप्लीकेशन है।